THE NARRATIVE

INDIA THAT IS भारत

INDIA THAT IS "भारत"

भारतीय संविधान की मूल प्रतिलिपि में प्रभु श्रीराम का चित्र

(भाग -1)

- भारतीय संविधान की मूल प्रतिलिपि के तीसरे भाग जिसमें की मौलिक अधिकारों को परिभाषित किया गया है
- वहां वैदही, अनुज लक्ष्मण के संग प्रभु श्रीराम की लंका विजय को चित्रित किया गया है
- इस भाग में प्रभु श्रीराम के चित्र से प्रजा को रामराज्य के समान मौलिक अधिकारों की स्वतंत्रता की परिकल्पना की गई है
- जहां जाति, लिंग, पंथ अथवा जन्म के स्थान के आधार पर प्रजा से कोई भेदभाव ना रखा जाए
- प्रभु श्रीराम का यह चित्रण हमें अन्याय के विरुद्ध संघर्ष करने, मजबूती से अपना मत रखने एवं धर्म अनुसार आचरण करने की भी प्रेरणा देता है
- जो अनादिकाल से हमारी संस्कृति में निहित समानता एवं भेदभाव रहित सामाजिक व्यव्यस्था को संपूर्णता से भी बखूबी परिभाषित करता है

INDIA THAT IS "भारत"

भारतीय संविधान की मूल प्रतिलिपि में प्रभु श्रीकृष्ण का चित्र

(भाग -2)

- भारतीय संविधान की मूल प्रतिलिपि के चौथे भाग में भगवान श्रीकृष्ण को अर्जुन को गीता का उपदेश देते चित्रित किया गया है
- संविधान के इस भाग में भारतीय गणराज्य के नीति निर्देशक तत्वों का उल्लेख संदर्भित है जो राज्य के कर्तव्यों का मार्गदर्शन करते हैं
- संविधान निर्माताओं ने नीति निर्देशक तत्वों के माध्यम से राज्य द्वारा जनकल्याणकारी योजनाओं को मूरत रूप देने की परिकल्पना की है
- नीति निर्देशक तत्व राज्य को केवल जनमानस के हित अनुसार आचरण एवं प्रजा की भलाई के लिए योजनाएं संचालित करने को प्रेरित करते हैं
- इस भाग में भगवान श्रीकृष्ण का चित्रण अनादिकाल से भरतभूमि पर लोकहित एवं धर्म (राज्य) रक्षा हेतु सर्वस्व न्योछावर करने की गरिमामयी परंपरा का ही भान दिलाता है
- जो राज्य को अपने कर्तव्यों के बोध एवं स्थिति अनुसार निर्णय लेने के प्रति सचेत रहने की आवश्यकता की सिख देता है

INDIA THAT IS "भारत"

भारतीय संविधान के मूल प्रतिलिपि में वैदिक आश्रम का चित्रण

(भाग -3)

- भारतीय संविधान के दूसरे भाग में नागरिकता को विस्तारित किया गया है जिसके मूल प्रतिलिपि में प्रतीकात्मक रूप से वैदिक आश्रम को चित्रित किया गया है
- नागरिकता को परिभाषित करने वाले इस भाग में वैदिक आश्रम का चित्रण भारत की सांस्कृतिक विरासत को ही प्रतिलिक्षित करता है
- जो भारतीय गणराज्य के नागरिकों को भी प्रतीकात्मक रूप से वैदिक काल से भारतीय संस्कृति में स्थापित धर्म अनुसार आचरण करने की सीख देता है
- संविधान के इस भाग में वैदिक आश्रम का चित्रण सांकेतिक रूप से भरतभूमि के निवासियों को हजारों वर्षों से अनवरत चली आ रही सनातन संस्कृति की अविरल धारा के प्रवाह से भी जोड़ता है
- जो मूलतः इस संस्कृति से जुड़ाव रखने वाले प्रत्येक व्यक्ति को पंथ, मान्यताओं अथवा पूजा पद्धति में अंतर के बावजूद भारतीय भूखंड के नागरिक के रूप में परिभाषित करता है

INDIA THAT IS "भारत"

भारत की गौरवशाली संस्कृति को प्रतिबिंबित करते रुचिकर चित्रों के अतिरिक्त भारतीय संविधान की भारतीय आत्मा संवैधानिक संस्थाओं के ध्येय/आदर्श वाक्यों एवं संसद में उकेरे गए भित्तिलेखों से भी बखूबी प्रतिलिक्षित होती है, जो मूलतः सनातन सांस्कृतिक दर्शन से चुने गए हैं

- ऐसे ही कुछ सर्वोच्च संवैधानिक संस्थाओं एवं राष्ट्रीय अभिकरणों के ध्येय/आदर्श वाक्य : -
- भारतीय गणराज्य : सत्यमेव जयते (मुंडका उपनिषद)
- सर्वोच्च न्यायालय : 'यतो धर्मस्ततो जय: (महाभारत महाकाव्य)
- आसूचना बयूरो (आईबी) : जागृतं अहर्निशं (संस्कृत)
- अनुसंधान एवं विश्लेषण स्कन्ध : धर्मो रक्षति रक्षितः (मनुस्मृति)
- राज्यसभा प्रवेश द्वार : एक सत् विप्रा बहुधा वदन्ति (ऋग्वेद)
- सभाध्यक्ष के आसन के निकट : धर्मचक्र-प्रवर्तनाय (बौद्ध दर्शन)